डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र
स० प्रा० मैथिली विभाग
सी० एम० जे० कॉलेज
दोनवारी हाट खुटौना
मो० न० 9546743796, 9434396082
Email- mishrasm966@gmail.com
B. A.

मैथिलीक विभिन्न बोली

मैथिली भाषा विस्तृत क्षेत्रमे बाजल जाइत अछि । मैथिली भाषा शास्त्रीय लोकनि मैथिलीक सीमा क्षेत्र पश्चिम मे भोजपुरी पूर्वमे बंगला दक्षिणमे मगही आओर उत्तरमे नेपाल व नेवारी सँ घेरल अछि । देवघर गोड्डा आदि क्षेत्र मे मैथिली भाषा मुंडा आ संथाली जनजातीय भाषा सँ प्रभावित अछि । ओना मानक मैथिली दरभंगा परिक्षेत्रक भाषा अछि।

तैं ग्रियर्सन महोदय एहि बोली कें भौगोलिक दृष्टिकोण सँ छ: भागमे विभाजित कएने छथि - मानक मैथिली , दक्षिणी बोली , पूरबी बोली , छिकाछिकी बोली , पश्चिमी बोली आ जोलहा बोली ।

पं० गोविंद झा ग्रियर्सन महोदयक एहि विभाजन कें नहि मानव ओ एकरा क्षेत्रानुसार पाँच वर्गमे विभाजित कएने छथि - पूर्वी मैथिली , दक्षिणी मैथिली , पश्चिमी मैथिली , उत्तरी मैथिली आ केंद्रीय मैथिली ।

एतए सम्मलित रूपें दुनू गोटेक मत पर विवेचन कएल जाइत अछि ।

1. मानक मैथिली : -

एकर क्षेत्र कैंद्रीय ओ उत्तरी पुरना दरभंगा जिला वर्तमान मे दरभंगा ओ मधुबनी जिला अछि । सुपौल अनुमंडल मे सेहो शुद्ध मानक मैथिली बाजल जाइत अछि । एहि ठाम मानक मैथिलीक प्रयोग सभ जातिक लोक द्वारा कएल जाइत अछि । एहि ठामक लोकक द्वारा बाजल गेल मैथिली भाषा कें शिष्ट आ परिनिष्ठित भाषा कहल जाइत अछि । इहो कहि सकैत छी जे ई भाषा एकताक परिचायक अछि । मुदा एहि मानक मैथिलीक रूप आधुनिक मैथिली साहित्य मे अत्यल्प भेटैछ । एहि क्षेत्रमे सेहो विभिन्न वर्गक बीच भाषाक स्वर फराक भए गेल अछि ।

2. दक्षिणी मैथिली (बोल) :-

एकर क्षेत्र समस्तीपुर जिला , उत्तरी मुंगेर , सहरसा आ मधेपुरा थीक । दक्षिणी बोली मे 'जनै छी ' क स्थान पर ' जानै छी ' । संबंध कारक ' क ' क स्थान पर ' के ' विभक्तिक प्रयोग होइत अछि । जेना ' नेना ' सँ मानक मैथिलीमे ' नेनाक ' आ दक्षिणी मैथिली मे ' नेनक' । ओ सर्वनामक स्थान पर 'ऊ ' क प्रयोग होइत अछि । अधिकरण मे ' ए ' विभक्तिक प्रयोग होइत अछि जे मानक मैथिली मे विरले पाओल जाइत अछि जखन कि एहि मे अधिक प्रचलित अछि । जेना - भोरे घरे तीन जना पाहुन छलथिन्ह ।

एहिना ' हमर ' 'तोहर ' क स्थान पर ' मोर ' 'तोर ' तथा ' जखन तखन ' क स्थान पर ' जब तब' क प्रयोग होइत अछि । क्रियापद मे देखलू , देखली आ देखलक , देखल थिक क स्थान पर देखलका, देखलतीह रूप चलैत अछि ' थिक अछि 'क स्थान पर ' छीक अछ ' शब्दक प्रयोग होइत अछि । एहि भाषाक आन्तरिक स्वरूपमे क्षेत्रानुसार परिवर्तन सेहो देखल जा सकैछ ।

3. पूर्वी मैथिली (बोली):-

एकर क्षेत्र पूर्णिया जिलाक कैंद्रीय आ पश्चिमी भाग , संथालपरगना क पूर्वी भाग , साहेबगंज आ देवघर आदि थिक । एकरा ग्रियर्सन महोदय ' गँवारी ' मैथिली नाम देने छथि । कारण एहि बोलीक प्रयोग अशिक्षित (ग्रियर्सनक मतें) वर्ग द्वारा कएल जाइत छल । मुदा ई नाम उपयुक्त नहि बुझि पड़ैत अछि । कारण जे एखन एहि भाषाक प्रयोग सभ वर्गक लोक द्वारा कएल जाइत अछि । ई क्षेत्र बंगालक सन्निकट अछि तें एहि भाषा पर बंगला भाषाक प्रभाव स्वभाविक अछि ।

एहि बोलीमे संम्बंध कारकक ' क ' विभक्ति क स्थान पर ' के ' क प्रयोग होइत अछि । जेना करक पूर्वी मैथिली में केर । सर्वनामक रूपमे सेहो मानक मैथिली सँ भिन्नता अछि । जेना - हम्मे , तोहे , तोहरे , इहाँक आदिक प्रयोग होइत अछि । एहिमे क्रियापदक रूप कर्मक अनुसारें परिवर्तित नहि होइत अछि । अल , अबक स्थान पर बंगला जकाँ इल , इब क प्रयोग भेटैत अछि । जेना - हमे आज देखिलो , एखनी फेरि देखिबो । एहिना मानक मैथिली ' थिक' क स्थान पर ' छिक ' क प्रयोग होइत अछि आ' भेलक' स्थान पर ' होलक' प्रयोग होइत अछि । एहि बोलीक आंतरिक स्वरूप मे क्षेत्रानुसार परिवर्तन सेहो देखल जा सकैछ ।

4. छिकाछिकी मैथिली (बोली):-

गंगाक दक्षिण , मुंगेर क पुबरिआ भागमे , दक्षिणी भागलपुर मे तथा संथालपरगनाक उत्तरी ओ पश्चिमी भागमे बाजल जाइत अछि । एहि बोली पर बंगला ओ मगही भाषाक प्रभाव स्पष्टत: देखल जा सकैछ एहि बोलीक शब्दक अंतमे ' हो ' ओ उच्चरित होइत अछि । जेना - अपनो , खएबहो , कहबहो , खएलहो , सुनलहो आदि एवं पदान्त मे ' इ ' क दीर्घ उच्चारण होइत अछि । जेना - देखी आबही ।

एहि क्षेत्रक भाषाक नामकरण ' छिकाछिकी ' ग्रियर्सन महोदय कएलनि । मुदा ई नामकरण भाषा वैज्ञानिक दृष्टिएँ युक्ति संगत नहि अछि । कारण वर्तमान मे एहि रूपक बोली दक्षिणी भागलपुर , संथालपरगनाक उत्तरी पश्चिमी भाग , गंगानदीक दक्षिणी भाग , मुंगेरक पुबारी भागक संग संग देवघरक समीपक लोक सभ सेहो बजैत अछि । दोसर एहि प्रकारक नामकरण संकुचित दृष्टिकोण सँ सेहो कएल गेल अछि । तें एहि प्रकारक नामकें अपमान सूचक बुझल जाइछ । एम्हर किछु दिन सँ एहि बोलीक कैंद्रीय स्थल भागलपुरक बोलीकें 'अंगिका ' नाम देल गेल अछि जे अधिकाधिक उपयुक्त बुझि पड़ैत अछि । कारण जे प्राचीन कालमे ई क्षेत्र अंग साम्राज्यक मुख्य कैंद्रीय स्थल छल । एहि बोलीक आंतरिक स्वरूप मे क्षेत्रानुसार परिवर्तन सेहो देखल जा सकैछ ।

5. पश्चिमी मैथिली (बोली) :-

एकर क्षेत्र पुरना मुजफ्फरपुर जिला एवं चम्पारण जिलाक पुबरिया भाग थिक जाहि पर भोजपुरीक उत्कट प्रभाव अछि । जेना - ह तथा हबे शब्दक प्रयोग । वर्तमान मे मुजफ्फरपुर सँ बनल नव जिला वैशाली अछि ओहि क्षेत्रक भाषाक नाम ' बज्जिका ' बोली देल गेल अछि । एहि बोलीक नामकरण वज्जी लिच्छवी वंशक इतिहासक आधार पर भेल अछि । कारण ई क्षेत्र वज्जी संघक मुख्य क्षेत्र छल । एखन उत्तरी मुजफ्फरपुर (वैशाली आ हाजीपुर) मे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आबि गेल अछि ।

6. उत्तरी मैथिली (बोली) :-

एकर क्षेत्र नेपालक तराइ आ वर्तमान सीतामढ़ी जिलाक उत्तरी भाग धरि मानल जा सकैछ । एहि बोली पर नेपाली आ नेवारी भाषाक प्रभाव परिलक्षित होइत अछि।

7. जोलहा बोली :-

एकर क्षेत्र पुरना दरभंगा जिला अछि । एहि ठामक मुसलमान लोकनि एहि बोलीकें बजैत छथि । एकर अतिरिक्त किछु ठामक मुसलमान मैथिली बजैत छथि जकरा शेखई ओ मुसलमानक बोली कहल

जाइत अछि । ओना मिथिलाक समस्त मुसलमानक बोली पर अरबी - फारसी भाषाक प्रभाव अछि । एकर अतिरिक्त वर्तमानकालक मुसलमानक बोली पर उर्दू आ हिन्दी भाषाक प्रभाव सेहो परिलक्षित होइत अछि ।

8. कैंद्रीय मैथिली (बोली) :-

मध्य मिथिलाक संपूर्ण क्षेत्रक भाषा जकरा समीप कोनो आन भाषा नहि अछि कैंद्रीय बोली कहल जाइछ । एकरा मैथिली साहित्यक भाषाक अत्यंत लग कहल जा सकैछ । कैंद्रीय मैथिली आ मानक मैथिली मे बड़ सामीप्य देखल जाइत अछि ।

एकर अतिरिक्त पं० गोविंद झाक अनुसारैं सामाजिक स्तर एवं जातिक आधार पर सेहो समस्त मैथिली भाषा क्षेत्र कैं फराक कएल जा सकैछ । सामाजिक स्तरक अनुसारैं मैथिलीक दू टा स्वरूप प्रत्येक क्षेत्रमे लक्षित होइत अछि ।

1. शिक्षित एवं सुसंस्कृत उच्चवर्गक बोली आओर 2. निम्नवर्गक बोली

जातिक अनुसारैं मैथिलीक तीनटा स्वरूप लक्षित होइत अछि ।

1. विद्याजीवी जातिक बोली - ब्राह्मण , कायस्थ, राजपूतक बोली ।

2. कृषिजीवी जातिक बोली - गोप , धानुक , कुर्मी आदिक बोली ।

3. व्यवसायजीवी जातिक बोली ।

एहि प्रकारैं एतवा ज्ञात होइछ जे मैथिली भाषाक क्षेत्रानुसारे अनेक बोली अछि । एखन एहि भाषाक स्वरूप मे तीव्र गति सँ परिवर्तन आबि रहल अछि । कारण मिथिलावासीक आवागमन अन्यान्य भाषी क्षेत्र मे बढि गेल अछि। दोसर शिक्षाक भाषा मुख्य रूपें हिंदी ओ अंग्रेजी अछि तैं मानक मैथिली क्षेत्र सेहो एहि भाषा सभसँ प्रभावित भए रहल अछि । फलतः सम्पूर्ण मैथिलीक बोलीक भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षणक आवश्यकता अछि । हम पूर्ण आशान्वित छी जे भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक पश्चात मैथिली बोलीक अन्यान्य रूप स्पष्ट होएत । यद्यपि आब जेना मैथिली रोजी रोजगार सँ जुड़ल अछि आ एकर व्यवहार बढ़ल अछि ताहि स्थितिमे मात्र एकेटा मैथिली प्रचलित अछि आ से अछि मानक मैथिली । कारण एही भाषा शैली मे मैथिली क ग्रंथ प्रकाशित भए रहल अछि , पत्र पत्रिका बहरा रहल अछि आ सभठाम पदद